जापानी लोगो द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

ज्वालामुखी

जनवरी 1985

अंक पांच

सम्पादक : योशिआकि सुजुकि

Scanned with CamScanner

जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

ज्वालामुखी

अंक 5 : जनवरी 1985

सम्पादक
योशिआकि सुजुकि

तोक्यो, जापान

Scanned with CamScanner

सम्पादक :

योशिआकि सुज़ुकि
YOSHIAKI SUZUKI

पता :

5-9 Matsuyama 3-chome,
Kiyose-shi, TOKYO, JAPAN

सहयोग राशि :

विदेश में 5 डालर (डाक व्यय सहित)

मुद्रक : रूपाभ प्रिंटर्स, 4/115 विश्वास नगर
शाहदरा, दिल्ली-110032 (भारत)

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

सम्पादकीय	योशिआकि सुजुकि	1
भारतीय साहित्य की खोज में एक यात्रा	याशिआकि सुजुकि	3
कहानी 'वापसी'	तोमिओ मिज़ोकामि	7
आपका पत्र		12
चाय पी लो, मिठाई ले लो	योशिको ओगावा	15
जापानी साहित्य की प्रवृत्तियाँ (3)	शिगेओ आराकि	17
परिशिष्ट		
(1) तोक्यो में एशियाई कवि सम्मेलन		21
(2) सद्भावना का फल— जापानी भाषा में आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की परिचयात्मक पुस्तक प्रकाशित		22
इस अंक के लेखक		25
विशेष सहयोगी		25

Scanned with CamScanner

भारतीय भोजन व संगीत की दुकान

आसन

भारतीय वातावरण में आपका स्वागत है

Open : Mon-Fri 16 : 00-01 : 00
Sat-Sun 14 : 00-01 : 00
Sunday रात 8 बजे से भारतीय संगीत सभा

26-2 Kitazawa 3-Chome, Setagaya-ku, TOKYO
Tel 03-465-7653

भारतीय भोजनालय

दान-रान

2 16-1 KICHIJOJI honmachi
Musashino-shi, TOKYO
Tel (0422) 22-5333

Scanned with CamScanner

सम्पादकीय

हाल ही में भारत के प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के राष्ट्र के नाम हिन्दी प्रसारण को लेकर हिन्दी प्रदेश में काफी चर्चा हुई। लोकसभा चुनाव में विजय के तुरन्त बाद टी० वी० द्वारा प्रधान मंत्री जी ने पहले अंग्रेजी में भाषण दिया और बाद में हिन्दी में। इससे हिन्दी प्रेमियों ने आपत्ति व्यक्त की कि प्रधान मंत्री जी अंग्रेजी को प्रथम दर्जा की भाषा मानते हैं क्या? और प्रधान मंत्री जी की हिन्दी सुनकर और निराश हो गए कि हिन्दी प्रदेश में जन्म लेकर भी उनके हिन्दी भाषण में गलतियां बहुत हैं। बेचारे प्रधान मंत्री जी को लोकसभा में शपथ ग्रहण करने के वक्त हिन्दी में ही बोलना पड़ा। वास्तव में भाषा राजनीति से सम्बन्धित है। कोई कहता है कि चुनाव के वक्त उम्मीदवार हिन्दी में ही भाषण देता है और निर्वाचित होने के बाद वह अंग्रेजी में ही बोलेगा। स्पष्ट है कि भाषा में राष्ट्रीयता जोड़ने से भाषा स्वयं राजनीति बन जाती है। इससे भाषाई समस्या भी पैदा हो सकती है।

आजकल हिन्दी शब्दों के बदले अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुत किया जा रहा है। इससे शुद्ध हिन्दी बोलने वाले चिन्तित हैं कि हिन्दी का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है। परन्तु सोचना होगा कि भाषा परिवर्तन-शील है, जीवित है। उदाहरण के लिए Shopping को लीजिए। आजकल लोग बोलते हैं कि Shopping करने जा रहे हैं। शुद्ध हिन्दी प्रेमी इस वाक्य को सुनकर नाराज हो जाएंगे कि क्यों अंग्रेजी शब्द का प्रयोग करते हो। पर बाजार का विज्ञापन बोर्ड देखिए अंग्रेजी में Shopping Center लिखा है 'खरीदारी केन्द्र' नहीं लिखा है तब Shopping शब्द का प्रयोग होगा ही। यह अंग्रेजीपन नहीं है। हिन्दी भाषा कभी अंग्रेजी भाषा नहीं बन पाएगी क्योंकि अंग्रेजी हिन्दी में व्याकरण बिलकुल अलग है। भाषा बिगड़ने की बात करने से ज्यादा महत्त्व यह होगा कि हर एक आदमी को अपनी मातृभाषा पर गौरव रखना होगा तब भारतीय भाषाओं का सही विकास होगा। अपनी भाषा पर गौरव न रखने का प्रमाण गत वर्ष जापान में देखने को मिला। गत वर्ष जापान में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी में विश्व के कई देशों की पाठ्य पुस्तकें साहित्य आदि प्रदर्शित की गईं। इन देशों में सिर्फ भारत ही ऐसा देश था कि प्रदर्शित किताबों के 95 प्रतिशत अंग्रेजी की थी। इससे जापानी लोगों में भ्रम पैदा होने की सम्भावना है कि भारत में पाठ्य-पुस्तक

Scanned with CamScanner

साहित्य की भाषा अंग्रेजी अथवा अंग्रेजी ही राष्ट्र भाषा होगी। शायद भारत के संयोजक ने इस मौके पर व्यापार करने के लिए अंग्रेजी किताबें ही दिखाई होगी।

अब अगले वर्ष फीजी में विश्व हिन्दी सम्मेलन होने वाला है। मातृभूमि भारत से दूर रहते हुए भी फीजी के मूल भारतीय लोग कितनी अपनी भाषा से प्यार करते हैं इसका प्रमाण आगामी विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन होगा।

गणतंत्र दिवस
26-1-1985

सम्पादक
योशिआकि सुजुकि

Scanned with CamScanner

भारतीय साहित्य की खोज में एक यात्रा

योशिआकि सुजुकि

इस वर्ष एशियाई देशों के संस्कृति, साहित्य, जन-आन्दोलन में रुचि रखनेवाले जापानी संगठन 'एशियन कल्चरल फोरम' की ओर से भारत भ्रमण का आयोजन किया गया। भारत की साहित्यिक परिस्थिति, संस्कृति, जनजीवन आदि की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से यह यात्रा आयोजित की गई। इस यात्रा मंडल में एशियन कल्चरल फोरम के अध्यक्ष श्री शिगेओ आराकि, 'ज्वालामुखी' के सम्पादक, जापान दूरदर्शन के कैमेरामैन, बाल साहित्यकार आदि शामिल थे। लेकिन 9 सदस्यों में से अधिकांश लोग पहली बार भारत के भ्रमण में आए। वे लोग भारतीय भाषाओं से, साहित्य से, संस्कृति से परिचित नहीं थे फिर भी उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे।

इस यात्रा का संस्मरण यहाँ प्रस्तुत है।

कलकत्ता

2 जनवरी रात के 11 बजे जापानी यात्रा मंडल जापान से कलकत्ता हवाई अड्डे पहुँचा। 3 जनवरी की शाम 6 बजे भारतीय भाषा परिषद के सभा कक्ष में प्रथम गोष्ठी भारतीय भाषा परिषद के साहित्य सूचना केन्द्र की डॉ० प्रतिभा अग्रवाल के सहयोग से हुई। इस गोष्ठी में कलकत्ता के नयी पीढ़ी के बंगला कवि, कवयित्रियों ने भाग लिया और हिन्दी लेखक, पत्रकार भी आए थे। भाग लेने वाले लोगों के नाम हैं, श्रीमती स्नेहलता चट्टोपाध्याय, हिन्दी लेखक श्री नवल, हिन्दी कवयित्री ऋता मेहता, लेखक श्री नगेन्द्र चौरसिया, बंगला युवा कवि श्री सुतपन चट्टोपाध्याय, श्री सुरजीत घोष; श्री गौरशंकर बनर्जी, श्री सिद्धार्थ मुखर्जी आदि थे। जापानी लोगों को भारत के आधुनिक साहित्य के बारे में जानकारी बहुत कम थी और शायद उपस्थित भारत के लोगों को भी जापानी साहित्य की जानकारी कम थी। इसलिए साहित्यिक चर्चा में समझने के लिए आपस में थोड़ी सी कठिनाई भी हुई। पहले जापानी लोगों की ओर से यह पूछा गया कि कहा जाता है बंगला साहित्य अन्य भारतीय भाषा साहित्य से उत्तम है यह बात सही है या नहीं। इस सवाल के जवाब में डॉ० प्रतिभा अग्रवाल ने कहा कि एक जमाना जरूर था, बंगला साहित्य दूसरे साहित्य से आगे चलता था परन्तु अब बंगला साहित्य श्रेष्ठ दूसरा साहित्य श्रेष्ठ नहीं है यह कहना उचित नहीं है, भारतीय भाषाओं का साहित्य एक साथ विकसित हो रहा है और होता ही रहेगा। इसलिए एक-दूसरे से तुलना करना भी कठिन है। अगर तुलना

Scanned with CamScanner

करें तो किस प्रकार करें। इस पर अनुवाद के बारे में भी चर्चा हुई।

इसके बाद मुख्य विषय जीवन से संबंधित साहित्य पर केन्द्रित रहा। हिन्दी साहित्य ही नहीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषा साहित्य का लक्ष्य जनता को जागृत करने के लिए है। जीवन से जुड़ा साहित्य जनता को प्रभावित कर सकता है। इसलिए भारत के लेखकों की ओर से पूछा गया कि जापान में जीवन से जुड़ा साहित्य लिखा जाता है तो किस प्रकार का? इस प्रश्न से जापान के लोग एक क्षण दंग रह गए। क्योंकि जापान के जनजीवन और भारत के जनजीवन में काफी अन्तर है। भारतीय साहित्य मुख्यत: जनता की समस्याओं अथवा समाज की समस्याओं को चित्रित करके पाठकों को जागृत करने के उद्देश्य से लिखा जाता है जबकि जापान में साहित्य की रचना पाठकों को जागृत करने का उद्देश्य नहीं होती। जापानी समाज उपभोगतावादी समाज है जहाँ सब चीजें मिल जाती हैं वहाँ प्रत्यक्ष रूप से जिन्दगी व्यतीत करने में कोई ठोस, समस्या नहीं है इसलिए साहित्य जनता को जागृत करने का साधन नहीं है। तब इस जवाब से भारत के लेखकों में हलचल मची कि जापान का साहित्य जीवन से जुड़ा हुआ नहीं है तो साहित्य का मतलब क्या? जापानी लोगों की ओर से यह कहना पड़ा कि भले ही जापानी साहित्य प्रत्यक्ष रूप से जीवन का चित्रण न करता हो, फिर भी इसमें परोक्ष रूप से जीवन का चित्रण जरूर है। कलाकार हो, या साहित्यकार हो, सब समाज से, अपने जीवन में संबंधित हैं और जीवन से संबंधित सृजनात्मक कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए जैसे फिल्मकार फिल्म में सेक्स दिखाता है पर सेक्स के माध्यम से परोक्ष रूप से जीवन को भी चित्रित कर सकता है। अमूर्त (Abstract) चित्र को देख कर जीवन से कटा हुआ नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें भी चित्रकार का जीवन चित्रित किया गया है।

इस चर्चा के बाद भारत के कवियों से कविता सुनाने का अनुरोध किया गया। जापान में कविता पढ़ी जाती है सुनाई नहीं जाती। यह सुनकर भारतीय कवि चकित हो गया। अधिकांश जापानी लोगों का पहला अनुभव था भारत के कवि की कविता सुनने का अर्थ तो समझ में नहीं आता था पर बंगला भाषा की संगीतात्मक ध्वनि ने जापानी लोगों को काफी प्रभावित किया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० प्रतिभा अग्रवाल ने की और जापानी भाषा से हिन्दी में, हिन्दी से जापानी भाषा में अनुवाद इस पत्रिका के सम्पादक सुजुकि ने किया।

पटना

कलकत्ता से विमान द्वारा पटना आए 4 जनवरी शाम को। पटना में जनवादी साहित्य एवं संस्कृतिकर्मी 'नयी संस्कृति' के सम्पादक श्री राणाप्रताप सिंह से मिले। श्री राणाप्रताप सिंह से बिहार की छोटी पत्रिकाओं की परिस्थिति, पत्रिकाओं का उद्देश्य, योगदान आदि की जानकारी प्राप्त की। यहाँ पर भारत के साहित्य एवं छोटी पत्रिकाओं का लक्ष्य स्पष्ट रूप से समझने का अवसर मिला। श्री राणाप्रताप सिंह के साथ भेंटवार्ता के बाद श्री जितेन्द्र राठौर से मिले जिन्होंने जापानी कवि केन्जि मियाजावा की कविताओं को हिन्दी में अनुवाद करके प्रकाशित किया। उन लोगों के साथ जापानी साहित्य एवं अनुवाद की समस्या के संदर्भ में बातें हुईं।

5 जनवरी शाम को साहित्यकार श्री मधुकर सिंह, श्री प्रियरंजन, और 'प्रस्ताव' के सम्पादक श्री हरिहर प्रसाद से मिले। खास तौर पर लेखक श्री मधुकर सिंह हमारे अनुरोध पर आरा से पटना तक आए थे इसके लिए उनके प्रति हम आभारी हैं। उन लेखकों के साथ हमारी भेंटवार्ता का विषय रहा—सही हिन्दी साहित्य की प्रतिनिधि रचना क्या है। उन लोगों का कहना था कि भारत में जमीन से जुड़े हुए साहित्य को हमेशा कला के लिए कलावादी साहित्य से संघर्ष करना पड़ता है। व्यवसायी पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य

Scanned with CamScanner

ही भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि अव्यवसायी छोटी पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य भी भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए दोनों ओर ध्यान देना चाहिए। जापानी लोगों की ओर से प्रश्न किया गया कि सुना है हिन्दी साहित्य का स्तर गिरता जा रहा है यह सही है? उन लोगों का जवाब था कि यह किस दृष्टि से? साहित्य निरन्तर विकसित होता है गिरता नहीं है। समीक्षक ऐसा ही कहते हैं पर आज के समीक्षक ठीक ढंग से समीक्षा नहीं करते। अन्त में उन लोगों ने जापानी लोगों की दृष्टि से चयन किया जापान का प्रतिनिधि साहित्य जानने का अनुरोध किया और हम लोगों ने मदद करने का वादा किया।

वाराणसी

भारत के तीर्थ स्थान वाराणसी में रेल से आए। लेखक डॉ० काशीनाथ सिंह ने स्टेशन पर मंडल का स्वागत किया।

7 तारीख को सुबह से लोग गंगा स्नान देखने गए और इसके बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के ग्रामीण विकास केन्द्र के निदेशक प्रोफेसर सत्येन्द्र त्रिपाठी और डॉ० काशीनाथ सिंह के साथ चिरई गाँव क्षेत्र का अवलोकन किया। ग्रामीण विकास केन्द्र के सहयोग से विकसित गाँव को देख कर हमारे मन में लेखक श्री मधुकर सिंह की बात याद आई। उन्होंने कहा था कि आज के गाँव के लोग प्रेमचन्द के जमाने का किसान नहीं है जो गरदन झुकाते थे, समस्याओं से पीड़ित थे। गाँव कुछ न कुछ विकसित हो रहे हैं। गाँव के अवलोकन करने के बाद बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थान सारनाथ होते हुए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय पहुँचे। वहीं ग्रामीण विकास केन्द्र एवं प्रगतिशील लेखक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गोष्ठी में भाग लिया। इस गोष्ठी में निदेशक प्रोफेसर त्रिपाठी ने स्वागत भाषण दिया और डॉ० काशीनाथ सिंह ने एशियन कल्चरल फोरम के बारे में परिचय दिया। इसके बाद एशियन कल्चरल फोरम के अध्यक्ष श्री आराकि ने एशियाई देशों की जनता के साथ मित्रता स्थापित करने की अपील की और जापानी पूँजीवादी शासन की नयी आर्थिक उपनिवेशवादी नीति पर टिप्पणी की। इसके बाद प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम हुआ। इसमें श्री आराकि से पूछा गया था कि क्यों जापान में सन् 1975 के बाद छात्र आन्दोलन और मजदूर आन्दोलन ठंडा हो गया? जवाब में श्री आराकि ने कहा कि छात्र आन्दोलन और मजदूर आन्दोलन का मुख्य विषय समाज को सुधारना नहीं था, अमेरिकी-जापान समझौता का विरोध करना था। अमेरिकी-जापान समझौता पर हस्ताक्षर हो जाने से छात्र आंदोलन एवं मजदूर आन्दोलन का मुख्य मुद्दा ही लुप्त हो गया इस वजह से जापान में छात्र आन्दोलन ठण्डा हो गया।

गोष्ठी के समापन भाषण में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० बच्चन सिंह ने जापान के आर्थिक उपनिवेश-वादी शासन पर चिन्ता व्यक्त की। इस गोष्ठी के बाद जापानी लोगों ने डॉ० काशीनाथ सिंह के घर पर रात्रि भोजन किया। फर्श पर बैठ कर जापानी लोगों ने अपने हाथों से खाना खाया। घर के स्वादिष्ट भोजन से सब जापानी लोग संतुष्ट थे। वाराणसी में सुबह से लेकर रात तक कार्यक्रम थे इसलिए सब लोग थके हुए थे फिर भी वाराणसी का एक दिन उन लोगों के लिए अविस्मरणीय रहा।

आगरा

आगरा में पूरा दिन विश्राम का दिन रखा। पूर्णिमा की रात। पूस की चाँदनी थी और ताजमहल के आस-पास कुहरा छाया हुआ था। एक जापानी सदस्य ने अपनी पत्नी के कान में फुसफुसाया कि तुम्हारे लिए इतना बड़ा मक़बरा मैं नहीं बनवा सकता। सिर्फ एक महारानी के लिए इतना बड़ा मक़बरा कितना खर्च करके बनवाया है शाहजहाँ ने! सब लोग कुहरे के बीच कैद ताजमहल को देखते रहे।

Scanned with CamScanner

दिल्ली

9 तारीख को आगरा से ताज एक्सप्रेस गाड़ी द्वारा राजधानी दिल्ली पहुँचे। 11 तारीख को साहित्य अकादमी के श्री एस० वालूराव से भेंटवार्ता की। श्री राव अंग्रेजी और कन्नड के कवि होने के अलावा अंग्रेजी पत्रिका 'Indian Literature' का सम्पादन करते हैं। हम लोगों ने उनसे साहित्य अकादमी की जानकारी प्राप्त की। हमारी ओर से सत्ता और अकादमी का सम्बन्ध, हस्तक्षेप के बारे में पूछे जाने पर श्री राव ने कहा कि साहित्य अकादमी एक स्वतंत्र संस्थान है जिस पर सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता। आपातकाल के वक्त के अकादमी का कार्य और अकादमी में काम करने वालों का उदाहरण देकर श्री राव ने अकादमी की स्वतंत्रता पर बल दिया। अन्त में हमारे अनुरोध पर श्री राव ने अपनी अंग्रेजी और कन्नड कविताएँ सुनाई।

शाम को हम लेखक श्री हिमांशु जोशी से मिले। भेंटवार्ता में श्री आराकि ने पूछा कि सच्ची प्रगतिशील क्या है? श्री हिमांशु जोशी ने जवाब में कहा कि किसी भी लेखक के मन में प्रगतिशील भावना है परन्तु पार्टी से सम्बन्धित प्रगतिशीलता सही प्रगतिशील नहीं होगी। सही प्रगतिशील साहित्य पार्टी की नीति से ऊँचा है साहित्य किसी भी बन्धन को तोड़ देता है। वही साहित्य की सृजनात्मकता है। क्या पार्टी की नीति की पाबंदी से बंधा साहित्य सही अर्थ में प्रगतिशील साहित्य कहा जा सकता है? साहित्य सब लोगों के हितों के लिए होना चाहिए हम लोगों ने उनसे भी साहित्य के स्तर में गिरावट के बारे में पूछा। जवाब में उन्होंने कहा कि हम प्रेमचन्द जी की तरह या प्रेमचन्द जी से अच्छी रचना सृजन करने की कोशिश करते हैं पर साहित्य के स्तर में गिरावट किस दृष्टि से, क्यों, इस सवाल का जवाब कौन दे सकता है। आज के समीक्षक निष्पक्ष तौर पर समीक्षा करते हैं या नहीं? साहित्य समीक्षक के लिए नहीं होता, पाठक के लिए है। पाठक ही सही प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करेगा। उनके साथ भेंटवार्ता में एशियन कल्चरल फोरम के श्री आराकि एवं श्री मोउरि ने पूरे तौर पर सहमति व्यक्त की।

••

एशियन कल्चरल फोरम के प्रतिनिधि मंडल की साहित्यिक यात्रा कलकत्ता से होते हुए दिल्ली तक पहुँची। कलकत्ता में, पटना में, वाराणसी में अथवा दिल्ली में कई साहित्यकारों से मिलकर भेंटवार्ताएँ की और इससे जरूर भारत के साहित्य एवं साहित्यिक परिस्थिति समझने का रास्ता मिल गया होगा। एशियन कल्चरल फोरम के प्रतिनिधि मंडल सामान्य जापानी Tour Group की तरह भारत के 'Sight Seeing' के लिए नहीं आया। भारत के लोगों से मिलने आए, साधारण चाय की दुकान में बैठकर चाय पी, घर का खाना खाया, गाँव देखने गए, रेल से यात्रा की। सब लोगों के मन में भारत की जनता के प्रति सद्भावना पैदा हुई। अधिकांश जापानी लोगों के पास भारत के साहित्य की जानकारी नहीं थी। इस यात्रा द्वारा साहित्य का लक्ष्य, भारत में साहित्य का अर्थ समझने का अवसर सब लोगों को मिला। इस यात्रा के लिए भारत के लेखकों ने दिल खोलकर हमारा स्वागत किया और बड़ी मदद की। इसके लिए हम आभारी हैं। एशियन कल्चरल फोरम के यात्रा मंडल 12 जनवरी की रात को दिल्ली से जापान के लिए रवाना हो गए।

Scanned with CamScanner

कहानी

वापसी

तोमिओ मिज़ोकामि

नाविक कमलनाथ आज घर वापस लौट रहा था। बन्दरगाह पर रुके जहाज़ में चढ़ने और अपनी-अपनी निर्धारित सीट पर बैठने में अभी कुछ समय की देर थी। कुछ औपचारिकताओं का निर्वाह अभी बाकी था। यात्रियों और जहाज़-कर्मचारियों की चहल-पहल के बीच गुमसुम खड़ा कमलनाथ अपने आपको बिल्कुल अकेला अनुभव कर रहा था। भीड़ में भी बिल्कुल अकेला। वह घर जा रहा था, परन्तु इस जाने और पहले के जाने में बहुत अन्तर था। आज उसके मन में थोड़ा-सा भी उत्साह, थोड़ी-सी भी उमंग नहीं थी। वह पूरी तरह निष्प्राण पुतला-सा लग रहा था। बार-बार उसका मन जापान में हुई दुर्घटना का स्मरण कर काँप उठता था जिसने उसके सम्पूर्ण जीवन को अप्रत्याशित रूप से बदल दिया। उस दुर्घटना का स्मरण आते ही उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया, उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसे लगा जैसे उसके पैरों के निकट ही एक भयंकर कर्णभेदी विस्फोट हुआ है। वह पसीने से लथपथ हो गया। अपने जहाज़ पर काम करते-करते ऐसे ही विनाश-कारी, कर्णभेदी विस्फोट की आवाज़ सुनकर वह सुन्न-सा हो गया था। उसी आवाज़ के साथ जहाज के पूरे-इंजिन-रूम में धू-धू करती हुई आग लग गई थी। उसने आग को बुझाने के भरसक प्रयास किये थे, परन्तु निष्फल चेष्टाओं के बाद लपलपाती हुई आग की लपटों से अपने आप को बचाने के लिये जब तक वह बड़ी कठिनाई से एक सीढ़ी पर चढ़ के बाहर निकला तब तक उसने अपने आप को प्रायः संज्ञाहीन पाया था। दूर से क्रमशः निकट आती हुई दमकल-गाड़ियों के सायरन की आवाजें वह अन्यमनस्क भाव से सुन पा रहा था। 'फायर होज़' से बरसते पानी का धुंधला-सा अहसास भी उसे हो रहा था, परन्तु खुद अपने विषय में वह कुछ भी सोच नहीं सकता था। अग्निकाण्ड पर काबू पाते-पाते लगभग एक घंटा बीत गया, किन्तु उसे ध्यान ही नहीं रहा कि वह समय कैसे बीता। वह कुछ भी सोचने या करने की मनःस्थिति में नहीं था, परन्तु अचानक अपने हाथों में हथकड़ी पड़ते देखकर वह एकदम चौंक उठा था। संयोगपूर्ण मानव-हत्या के अभियोग में उसे गिरफ्तार किया गया था : इस अग्निकाण्ड में दस जापानी कारीगर, जो इंजिन-रूम में उस समय काम कर रहे थे, मृत्यु के शिकार हो गये हैं। इस बात को सुनकर ही उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई, वह बेसुध हो गया था। भला उसे कैसे विश्वास हो सकता था कि इस अप्रत्याशित अग्निकाण्ड की वजह से दस मनुष्यों के प्राण गये होंगे ? वह अपने दुर्भाग्य पर रोता रहा। जापानी पुलिस की तीखी जाँच-पड़ताल के समय भी वह केवल अपने भाग्य को ही कोसता रहा था। उसकी अन्तरात्मा भी उसे प्रताड़ित कर रही थी।

Scanned with CamScanner

यह सब कुछ छः महीने पहले हुआ था।

जापान की सासेबो बन्दरगाह पर भारतीय जहाज 'बलजक' में हुए इस भयंकर अग्निकाण्ड का पहला मुकदमा सासेबो की अदालत में ही हुआ था। कमलनाथ अपने अधीनस्थ कर्मचारी सुरेश के साथ अभियुक्त के रूप में पेश हुआ था। घर से इतनी दूर विदेश की एक अदालत में उसके भाग्य का फैसला होने वाला था ! इससे पूर्व उसने अदालत का दृश्य केवल हिन्दी फिल्मों में ही देखा था। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वह जीवन में कभी असली अदालत देखेगा—और वह भी खुद अभियुक्त की कुर्सी पर बैठकर। अदालत में तीन न्यायाधीशों के, जिनमें से मध्य में बैठने वाले बुजुर्ग मुख्य न्यायाधीश थे, बायीं ओर दो वकील, दायीं ओर दो सरकारी वकील बैठे थे और ठीक न्यायाधीशों के सामने उसके और सुरेश के बैठने का प्रबन्ध था। दोनों अभियुक्तों के पीछे दर्शकों तथा संवाददाताओं की कुर्सियाँ थीं। न्यायाधीशों का काला गाउन बिल्कुल वैसा ही था जैसा उसने प्रायः फिल्मों में देखा था, परन्तु वैसी जोर-शोर वाली बहसें नहीं थीं। फिल्मों में तो प्रभावशाली भाषण-कला तथा नाटकीय शैली की आवश्यकता होती है, पर यहाँ अदालत की सम्पूर्ण कार्यवाही अत्यंत शान्ति से चलती रही—यह फिल्मी दुनिया जो नहीं थी। उल्लेखनीय बात केवल यह थी कि चूंकि कमलनाथ और सुरेश दोनों को जापानी भाषा नहीं आती थी, इसलिये दोनों अभियुक्तों के लिये एक दुभाषिये को रखा गया था जो उनके पास बैठकर जापानी से हिन्दी में तथा हिन्दी से जापानी में अनुवाद करता जाता था।

जापान के क्यूशू द्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित सासेबो नगर जलपोत-उद्योग का एक मुख्य केन्द्र है अतः यहाँ बहुत सारे विदेशी जहाज भी आते रहते हैं, इसलिये सासेबो की अदालत के मुकदमों में विदेशी अभियोगी-अभियुक्तों का होना कोई असाधारण-सी बात नहीं। वस्तुतः अंग्रेजी के दुभाषिये तो यहाँ कई बार नियुक्त हो चुके थे परन्तु इस अदालत के इतिहास में किन्हीं भारतीयों को लेकर मुकदमा होना पहली घटना थी, विशेषकर हिन्दी के लिये दुभाषिये की नियुक्ति अपने आप में एक उल्लेखनीय घटना सिद्ध हो रही थी। इस भाषा-समस्या के कारण अदालत की कार्यवाही में दुगुना समय लग रहा था और कमलनाथ जानता था कि अदालत में बैठे अधिकाँश दर्शकों को इससे बोरियत भी हो रही थी। पर उस समय उसका ध्यान इस ओर नहीं गया था।

अदालत में कमलनाथ और सुरेश पर आरोप लगाते हुए पूरी दुर्घटना का विवरण प्रस्तुत करके सरकारी वकील ने कहा था—भारतीय समुद्री जहाज 'बलजक' (45,000 टन) ने विशाखापट्टनम बन्दरगाह से रवाना होने के बाद सिंगापुर, हांगकांग होते हुए जापान की विशालतम बन्दरगाह योकोहामा को अपना गंतव्य बनाया था, परन्तु यात्रा के दौरान ही यह योजना बनाई गई कि योकोहामा पहुंचने से पूर्व सासेबो बन्दरगाह पर जहाज की मशीनों की मरम्मत और रंग-रोगन का लेप आदि करा लिया जाए, इससे जहाज-कर्मचारियों को विश्राम भी मिल जायेगा। जहाज सम्बन्धी सारा काम सासेबो की ही एक जानी-मानी जापानी कम्पनी को सौंप दिया गया, लेकिन जहाज पुरानी मशीनों, जो खराब हो चुकी थीं, को हटाने का काम खुद 'बलजक' के कर्मचारियों को करना था। अतः जहाज के चीफ़ इंजीनियर वसंत मेहता ने इंजिन-रूम में लगे पुराने जनरल सर्विस पम्प को निकालने का आदेश थर्ड इंजिनियर कमलनाथ और असिस्टेण्ट पम्प-मैन सुरेश को दिया था। इस मशीन को फर्श के साथ जोड़ने वाले छः बोल्टनट थे जिन्हें सामान्यतः स्पैनर से ढीला करके मशीन को हटाया जा सकता था परन्तु 'बलजक' की यह मशीन बहुत पुरानी होने के कारण उन बोल्टनटों में जंग लगा हुआ था। पहला और दूसरा बोल्टनट तो मुश्किल से खुल गये किन्तु तीसरा बोल्टनट इतना सख़्त हो चुका था कि अनेक कोशिशों पर भी नहीं खुल पा रहा था। शेष तीनों बोल्टनटों का भी यही हाल था। मशीन को उसी दिन हटाने का कड़ा आदेश चीफ इंजिनियर ने दिया हुआ था परन्तु स्पैनर से बोल्टनटों के न खुलने से समस्या उत्पन्न हो रही थी। तब कमलनाथ ने सुरेश से कोई समाधान ढूंढने को कहा। सुरेश का सुझाव था कि गैस-

Scanned with CamScanner

कटर से पिघलाकर बोल्टनटों को खोला जाये, परन्तु न तो कमलनाथ और न ही सुरेश के पास गैस-कटर था। सुरेश ने बताया कि उसने जहाज पर जापानी कर्मचारियों को गैस-कटर का प्रयोग करते देखा था इसलिये वह उनसे उसे उधार ले सकेगा। हालांकि कमलनाथ को मालूम नहीं था कि सुरेश को गैस-कटर का प्रयोग करना आता है या नहीं, उसे सुरेश का सुझाव तर्कसम्मत लगा। अतः उसने अपनी सहमति दे दी। सुरेश जापानी-कम्पनी के कर्मचारियों से संकेतात्मक भाषा का सहारा लेकर दो गैस-कटर ले आया और बोल्टनटों को पिघलाकर खोलने का काम वे दोनों ही करने लगे। तीसरा बोल्टनट जल्दी ही खुल गया लेकिन चौथे वाला इतना सख्त था कि गैस-कटर के प्रयोग के बावजूद पिघलता ही नहीं था। दोनों ही गैस-कटर की लौ को बहुत तेज करने लगे जिसके फलस्वरूप बिल्कुल लाल-लाल ज्वलंत लोहे के टुकड़े जनरल सर्विस पम्प के नीचे वाले फर्श पर एक के बाद करके गिरने लगे। उस फर्श पर कई दिन से इंजिन-रूम में हो रही मरम्मत की वजह से बहुत अधिक मात्रा में बिल्ज (गंदा तेल) फैला हुआ था और वह ज्वलनशील था। अभियुक्तों द्वारा गैस-कटर के प्रयोग के लगभग पन्द्रह मिनट बाद वही ज्वलनशील बिल्ज धीरे-धीरे गर्म होकर प्रज्वलन-ताप तक पहुँच गया। तब एक भयंकर विस्फोट के साथ पूरे इंजिन-रूम में आग लग गई। उस समय इंजिन-रूम के दूसरी ओर बारह जापानी कर्मचारी काम कर रहे थे। उनमें से दो तो मुश्किल से भागकर बाहर निकलकर बच गये शेष दस आदमी बाहर निकलने का रास्ता न पाकर विषाक्त कार्बन मोनोक्साइड के कारण मर गये। इसलिए दोनों अभियुक्तों का कर्त्तव्य था कि गैस-कटर का प्रयोग करने के पहले जनरल सर्विस पम्प के नीचे के बिल्ज की जाँच कर लेते। ऐसा नहीं किया गया अतः इस पूरी दुर्घटना के लिये अभियुक्त ही जिम्मेदार है। मृत्यु के शिकार बने सभी जापानी कर्मचारी तीस-चालीस वर्ष की आयु के थे और वे सब अपने अपने परिवार की रोजी-रोटी के मुख्य आधार थे। उन परिवारों के अपार दुख तथा जीवन की भावी चिन्ताओं को देखते हुए अभियुक्तों का अपराध छोटा नहीं है—यद्यपि यह अपराध जानबूझकर नहीं किया गया था। अतः दोनों को कड़ी सजा मिलनी चाहिये।

सरकारी वकील के इस बयान को सुनकर कमलनाथ पर वज्रपात सा हो गया था। उसकी गलती से ही दस व्यक्तियों की मृत्यु ! उसे मालूम न था इंजिन रूम में आग लगने से पूर्व बारह जापानी कर्मचारी काम कर रहे थे। उसने अपने दुर्भाग्य को बार-बार कोसा था।

वैसे, उसके भाग्य में दुख ही अधिक लिखा हुआ था। कलकत्ते के एक मध्यवर्गीय बंगाली परिवार की वह इकलौती संतान था परन्तु पाँच वर्ष की आयु तक पहुँचते न पहुँचते अचानक उसके पिता का देहान्त हो गया था। विधवा माँ को पुत्र के भरण-पोषण में अनेक कष्ट झेलने पड़े। कलकत्ते जैसे महानगर में भी एक मध्यवर्गीय असहाय स्त्री के लिए नौकरी मिलना बहुत कठिन था। अल्प वेतन वाली छोटी-सी नौकरी मुश्किल से पाने के बाद माँ ने जी-तोड़ मेहनत की थी। वैसे भी माँ शरीर से स्वस्थ नहीं थी, इसलिये इस अतिरिक्त कठोर परिश्रम के कारण वह प्रायः बीमार हो जाती थीं। फिर भी उसकी प्रबल इच्छा थी कि कमलनाथ यूनिवर्सिटी पास करे। किन्तु माँ की दिन-प्रतिदिन बढ़ती कठिनाइयों को कमलनाथ देख न सकता था। वह जल्दी ही खुद कमाकर माँ की परेशानियाँ दूर करना चाहता था। बचपन से ही उसे मशीनों में रुचि थी, इस-लिये वह इंजिनियर बनना चाहता था। परन्तु जीवन की इन कठोर वास्तविकताओं ने उसकी इच्छा को पूरा न होने दिया। उसने मैरिन इंजिनियरिंग कालेज में प्रवेश ले लिया नाविक बनने के इरादे से। पर माँ के विरोध को देख वह द्विविधा में पड़ गया था। माँ को छोड़कर दूर विदेशों में जाने का विचार अगर एक ओर उसे कष्ट पहुँचा रहा था तो दूसरी ओर उसके कौतूहल को बढ़ावा भी देता था। दुनिया देखने की इच्छा किसे नहीं होती ? परन्तु उसके लिये नाविक बनने के लिये सब से बड़ा प्रेरक कारण तनख़्वाह के अतिरिक्त अच्छा भत्ता मिलने की बात भी थी। माँ के सुख-आराम के लिए चिन्तित कमलनाथ के लिये यह बड़ा आकर्षण था। बचपन से ही मशीनों के प्रति आकर्षण और इंजिनियर न बन पाने की अधूरी साध ने भी उसे नाविक बनने के लिये

Scanned with CamScanner

प्रेरित किया था। अतः तीन साल मैरिन इंजिनियरिन्ग कालेज में पढ़ने के बाद जब नाविक बनकर पहली बार सागर-यात्रा पर निकला था तो माँ फूट-फूटकर रोई थी। बड़ी मुश्किल से उसने माँ को समझाया था कि वह हर साल दो बार छुट्टी लेकर कलकत्ता वापस आया करेगा और हर महीने तनख्वाह भेजा करेगा। फ़िफ़्थ(पंचम) इंजिनियर के पद से शुरू करके उसने थर्ड (तृतीय) इंजिनियर के पद पर उन्नति कर ली थी। काम अच्छी तरह सीख लिया था। जहाज़ पर की दुनिया बिल्कुल भारत का लघु रूप था—भिन्न-भिन्न प्रांतों की भाषा प्रायः सुनने का अवसर मिलता था लेकिन वह हिन्दी या बंगला में बात करता था, पर अपने उच्च अधिकारियों के साथ अंग्रेजी में ही बोलता क्योंकि मशीन सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी में ही थे। उसे अपने उज्ज्वल भविष्य का विश्वास हो चला था। चीफ़ इंजिनियर बनने की उम्मीद होने लगी थी। मां को हर सप्ताह पत्र लिखता था। मां अपने एकाकीपन को सहन करते करते उसके कल्याण की कामना करती थी, पर उस दुर्घटना के बाद उसने मां को कोई पत्र नहीं लिखा। किस तरह लिखता ? क्या लिख सकता था ?

उसी वक्त बचाव पक्ष के वकील की आवाज़ ने उसके ध्यान को पुनः अदालत में खींच लिया था। जापानी वकील ने कहा था—बोल्टनट खोलने के लिये गैस-कटर का प्रयोग करने से पहले दोनों अभियुक्तों ने नीचे फर्श पर टार्च से देखा था कि बिल्ज नहीं था—यह बात कमलनाथ बार-बार कहता आया है, इसलिये उसकी बात पर विश्वास करना चाहिये। अगर फर्श पर कुछ बिल्ज फैला हुआ भी हो तो उसपर चिन्गारी या ज्वलंत लोहे के टुकड़े गिरने पर हर समय आग लग जाय—यह कोई आवश्यक नहीं है यानि उसमें कारण और कार्य का कोई अवश्यंभावी सम्बन्ध प्रमाणित नहीं होता। जब आग लग गई थी तो कमलनाथ ने फायर होस से उसे बुझाने की कोशिश की थी परन्तु फायर प्लग में पानी बिल्कुल नहीं आ रहा था। घबराहट के मारे उसने फायर एक्सटिंग्युशर भी गिरा दिया था पर यह तो आग लगने की आरम्भिक स्थिति में ही काम आ सकता है। दुर्भाग्य यहीं तक सीमित नहीं था। आग लगते ही बिजली बंद हो गई। इस अंधेरे ने इंजिन रूम में काम कर रहे लोगों में हड़बड़ी मचा दी। इससे भी बड़ी त्रासदी यह थी कि पोर्ट-साईड (जहाज़ की बायीं ओर) की सीढ़ी किसी कारणवश उतरवा दी गई थी जिसकी वजह से उन दस जापानी कर्मचारियों के बाहर निकलने का रास्ता ही बंद हो गया। ये सारे दुष्परिणाम अभियुक्तों के लिये कल्पनातीत थे। निश्चय ही इन सबके लिये जापानी कम्पनी ही पूरी तरह से दोषी है। अगर बिजली बंद न होती तो कर्मचारी बच सकते थे। फायर प्लग में पानी होता तो अभियुक्त खुद उसे बुझा सकते थे। और तो और, यों भी जहाज़ पर इतने लोग काम कर रहे थे, जापानी कम्पनी का कर्त्तव्य था कि वहाँ एक पहरेदार को नियुक्त किया जाता ताकि किसी भी प्रकार की सम्भावित दुर्घटना की उचित चेतावनी दी जा सकती। जलपोत-उद्योग के क्षेत्र में ऐसी जानी-मानी कम्पनी ने ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की थी—यह बहुत आश्चर्य की बात है। अदालत में बैठे दोनों अभियुक्तों को जापानी कम्पनी की कार्य-कुशलता का पूरा विश्वास था परन्तु आग लगने की वह दुर्घटना बिल्कुल अप्रत्याशित थी इसलिये दोनों अभियुक्तों को इसके लिये दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

बचाव पक्ष के वकील की इन तर्कपूर्ण एवं प्रभावशाली दलीलों को सुनकर कमलनाथ का मन उनके लिए कृतज्ञता से भर गया था। उसे अपने आप को निरपराधी सिद्ध किये जाने का भरोसा हो चला था, परन्तु सरकारी वकील ने इस बार अपनी दलीलों में तर्क के साथ भावना को भी मिला दिया था। उनका कहना था—दुर्घटना के छः महीने बाद भी वे दोनों उन परिवारों के यहाँ क्षमा माँगने नहीं गये जिनके प्रियजन अग्निकाण्ड में मरे थे। इससे यह पता चलता है कि अभियुक्तों को अपने अपराध का लेशमात्र भी खेद नहीं है। अतः सज़ा और भी सख़्त मिलनी चाहिये।

कमलनाथ को सरकारी वकील का यह तर्क समझ नहीं आ रहा था। उसकी राय में क्षमा मांगने का मतलब था अपना अपराध स्वीकार करना और अपराध को स्वीकार करने का मतलब उसके लिये कड़ी सज़ा

Scanned with CamScanner

भोगने के लिये तैयार होना था। मनुष्यता के नाते उसे शोक-संतप्त परिवारों से अपार सहानुभूति थी, परन्तु उनके घर जाकर क्षमा माँगने की बात वह नहीं समझ पाया था। साक्षी के तौर पर अदालत में उपस्थित हुए 'बलजक' के कैप्टन तथा चीफ इंजिनियर ने भी अपना दोष स्वीकार नहीं किया। कैप्टन ने कहा था कि इंजिन रूम में जितने भी काम हो रहे थे उनका इंचार्ज तो चीफ़ इंजिनियर ही था। मुख्य न्यायाधीश ने इस पर असंतोष प्रकट किया था और बार-बार कैप्टन से पूछा था कि फिर भी जहाज के कैप्टन की हैसियत से आप पूरी तरह से दुर्घटना की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते न ? कम से कम नैतिक उत्तरदायित्व तो आपका है न ? परन्तु कैप्टन ने अन्त तक अपनी जिम्मेदारी नहीं मानी, सम्भवतः वह 'नैतिक जिम्मेदारी' का मतलब ही न समझा हो। चीफ़ इंजिनियर ने भी कहा था—जब काम थर्ड इंजीनियर को सौंप दिया गया था तो उसे पूरा करना उसकी ही जिम्मेदारी थी। इस तरह दोनों ही उच्च अधिकारी अपने आप को निर्दोष ही सिद्ध करते रहे। बचाव पक्ष के वकील ने बाद में कमलनाथ को समझाया था कि न्यायाधीश चाहते थे कि यदि कैप्टन और चीफ़ इंजीनियर अपने-अपने 'नैतिक उत्तरदायित्व' को स्वीकार कर लेते तो कमलनाथ और सुरेश के दण्ड की मात्रा में कटौती हो सकती थी। परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ था। जापानी न्याय-व्यवस्था में अपना दोष मान लेने से कुछ दया भी मिल सकती थी पर कमलनाथ के लिये दोष मानने का मतलब कड़ी सजा को भी मानना था। इसलिये कमलनाथ ने अपने बयान में कहा था कि उसने जो कुछ भी किया वह चीफ़ इंजीनियर के आदेश का पालन मात्र था। सुरेश ने भी यही कहा था कि उसने थर्ड इंजीनियर की आज्ञा से ही वैसा किया था।

मुकदमे के अन्त में सरकारी वकील ने अदालत से कमलनाथ के लिये तीन साल और सुरेश के लिये दो साल की क़ैद की सजा माँगी थी। सरकारी वकील की माँग को सुनकर कमलनाथ को चक्कर-सा आ गया था। उसे अपने पैरों तले की जमीन खिसकती सी जान पड़ी थी। उसे तुरन्त अपनी बूढ़ी माँ की याद आयी थी। इस खबर को सुनकर तो शायद वह जी नहीं सकेगी, आत्म-हत्या ही कर लेगी। मुख्य न्यायाधीश ने निर्णय देते हुए कमलनाथ को दो साल (पर दो साल की माफ़ी), और सुरेश को डेढ़ साल (पर डेढ़ साल की माफ़ी) की क़ैद की सजा दी थी। इससे पूर्व कमलनाथ और सुरेश, वकील के सुझाव पर, उन शोक-संतप्त परिवारों के सम्मुख सिर झुकाकर क्षमा माँगने भी गये थे। शायद न्यायाधीश महोदय के निर्णय पर इसका कुछ अच्छा प्रभाव ही पड़ा था। अदालत ने उन्हें निर्दोष नहीं कहा था, पर जापानी कम्पनी की ग़लती को भी मानकर उनकी सजा माफ़ कर दी थी।

'बलजक' के मालिकों ने अपनी ओर से केवल इतना ही किया था कि उन दोनों के लिये वकीलों को नियुक्त किया और अपने बीमे की राशि में से अग्निकाण्ड के शिकार बने प्रत्येक परिवार के लिये एक करोड़ येन क्षतिपूर्ति के रूप में दान दिये थे। बस इतना करके 'बलजक' अपने गंतव्य की ओर बढ़ गया था। कमलनाथ और सुरेश को सासेबो में ही छोड़ दिया गया था। वकील साहब तथा दयालु दुभाषिये की ओर से मिलने वाला ढाढ़स तथा आश्वासन ही दोनों के लिये मन का एकमात्र सहारा था।

कमलनाथ आज घर वापस लौट रहा था, पर अब वह नाविक नहीं था। बन्दरगाह पर रुके जहाज में चढ़ने और अपनी-अपनी निर्धारित सीट पर बैठने में अभी कुछ समय की देर थी। कुछ औपचारिकताओं का निर्वाह अभी शेष था। यात्रियों और जहाज-कर्मचारियों की चहल-पहल के बीच गुमसुम खड़ा कमलनाथ अपने आप को बिल्कुल अकेला अनुभव कर रहा था। भीड़ में भी अकेला। वह घर जा रहा था, पर क्या यह जाना पहले सा ही था ?

Scanned with CamScanner

आपका पत्र

'ज्वालामुखी' का चौथा अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

'ज्वालामुखी' पत्रिका वस्तुत. हिन्दी के माध्यम से पारस्परिक विचार-विमर्श, संस्कृति एवं साहित्य के आदान-प्रदान का सेतु है। यह पत्रिका निश्चय ही जापान में रह रहे हिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी साहित्य का रसास्वादन कराने में सहायक सिद्ध हो सकेगी। प्रस्तुत अंक में समाविष्ट लेखों का स्तर प्रशंसनीय है। 'हिंदी कहानी में आधुनिकता का प्रतीक' नामक लेख को पढ़कर ऐसा लगता है कि यह पत्रिका भारतीय हिन्दी साहित्य के शोधात्मक पक्ष की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।

राजमणि तिवारी
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
निदेशक

'ज्वालामुखी' के चतुर्थांक में प्रकाशित प्रत्येक रचना अपने आप में बेजोड़ है। समग्र रूप से देखें तो कहा जा सकता है कि चौथे अंक तक की यात्रा में ही 'ज्वालामुखी' पत्रिका अत्यंत परिपक्व एवं प्रभावशाली हो गयी है।

अवधेश मोहन गुप्त
हिन्दी अधिकारी
भारतीय नौवहन निगम
कलकत्ता

'एक नामंजूर लेख' मैंने देख लिया है। मुझे इस बात से आश्चर्य नहीं हुआ कि वह लेख कहीं छप नहीं सका। आपका यह कथन कि शराब कोई बुरी चीज नहीं, 'विवादग्रस्त' है। हम लोग तो भारतवर्ष में उसे बहुत बुरी चीज मानते हैं। महात्मा गांधीजी ने उसके खिलाफ बहुत काफी लिखा था। हमारी स्वदेशी सरकार भी शराबबन्दी नहीं कर सकी। स्वयं मेरे नगर फीरोजाबाद में उसकी कितनी ही दुकानें हैं।

Scanned with CamScanner

श्री आकिरा ताकाहाशि का व्यंग्य निस्संदेह बहुत उच्चकोटि का है।

बनारसीदास चतुर्वेदी

आपके द्वारा प्रेषित 'ज्वालामुखी' ने मेरे अन्तःकरण में उल्लास की विलक्षण ज्वाला का सर्जन किया है। हमारे लिए अत्यन्त उत्साहवर्द्धक भी है।

सम्भव है कि पत्रिका में लिखित सभी बातों से हम में से कुछ लोग कदाचित सहमत न हों, किन्तु इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात क्या हो सकती है कि जापानी लोगों द्वारा लिखित यह पत्रिका हिन्दी भाषा और साहित्य की ऐसी अनुपम सेवा कर रही है।

डा० रामकरण शर्मा
संयुक्त शिक्षा सलाहकार
शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय

मुझे जापान में प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'ज्वालामुखी' को देखने का अवसर मिला है। इसके लेखक और सम्पादक सभी जापानी हैं। उनकी अभिव्यक्ति तो जोरदार है ही।

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
स्वस्थ केन्द्रीय हिन्दी समिति

'ज्वालामुखी' मिला, धन्यवाद।

उचिदाजी का लेख बहुत रोचक था। उनका व्यक्तित्व खूब उभर आता है। आशा करता हूँ कि ज्यादा-से-ज्यादा भारतीय लोग उनका लेख पढ़ें।

कहानी और लेखक की तटस्थता के बारे में सुजुकिजी ने जो चर्चा की, वे सब ठीक लगती हैं।

हिदेआकि इशिदा
तोक्यो, जापान

'इंडियन-जेपनीज भाई भाई' व्यंग्य लेख बहुत ही सुन्दर और सत्यता से परिपूर्ण है। वस्तुतः भारत में हिन्दी का यही रूप रह गया है।

डॉ० तोमिओ मिजोकामि का लेख 'ओसाका में ग्रीष्मकालीन पंजाबी गहन पाठ्यक्रम' पढ़कर मुझे नयी जानकारी हुई है।

डा० त्रिलोकीनाथ वजबाल
मथुरा

गतवर्ष मैंने उड़ीसा के गाँव की यात्रा की। वहाँ के एक गाँव में 'ज्वालामुखी' नामक मंदिर मिला। मंदिर का नाम सुनकर आपकी पत्रिका की याद आयी और उस मंदिर के पुजारी से पूजा भी करायी थी।

डा० मासातोशि कोनिशि
रिक्कयो विश्वविद्यालय
जापान

Scanned with CamScanner

पत्रिका के लेख पढ़े। हिन्दी-जापानी मित्रता संघ नामक लेख द्वारा लेखक ने काफी सटीक व्यंग्य किया है तथा लेख हम भारतीयों की आँख खोलने वाला सिद्ध हो सकता है। यदि पत्रिका में लेखों की संख्या और बढ़ा दी जाय तो बहुत अच्छा रहे।

रोहिताश्व कुमार अग्रवाल
आगरा

इस अंक में विशेष रूप से उल्लेखनीय 'इंडियन जैपनीज भाई भाई' व्यंग्य रचना बहुत ही रोचक प्रतीत होती है। लेखक एक बेमिसाल वास्तविकता का रेखाचित्र खींचने में सफल रहा।

एस० के० राय
कलकत्ता

इस अंक की सामग्री पढ़ गया हूँ। 'भिक्षावृत्ति' की दृष्टि से हिन्दी कहानी को समझने-समझाने की आपकी कोशिश दिलचस्प है। आकिरा ताकाहाशि का व्यंग्य मुझे बेहद अच्छा लगा। बहुत ही सहज ढंग से लेखक ने 'हिन्दी प्रेमी' हिन्दुस्तानी की अंग्रेजी दासता पर व्यंग्य किया है। आकियो ताकामुरा की छोटी-सी भेंट वार्ताओं पर आधारित टिप्पणी 'छः अगस्त 1983 हिरोशिमा में' मानव में बसे दरिन्दे का रूप सामने ले आती है।

कुल मिलाकर अंक अच्छा बन पड़ा है। विशेष रूप से यह देखते हुए कि इसके लेखक विदेशी हिन्दी प्रेमी हैं।

विविक रमेश
कवि, नई दिल्ली

'ज्वालामुखी' पत्रिका का चौथा अंक देखा।

जापानी लोगों द्वारा लिखित यह पत्रिका मुझे अनेक दृष्टियों से उल्लेखनीय लगी। रचनाओं का चयन एवं सम्पादन ही श्रेष्ठ नहीं, इसके पीछे एक विजन दृष्टि भी है, एक मिशन भी।

हिमांशु जोशी
लेखक, नई दिल्ली

सम्पादक की ओर से

'ज्वालामुखी' के चौथे अंक पर कई लोगों से प्रतिक्रियाएँ मिलीं। इसके लिए बहुत धन्यवाद। चौथे अंक में श्री आकिरा ताकाहाशि का व्यंग्य लेख बहुत पसंद किया गया एवं विवादास्पद भी रहा। लेखक के अनुसार उस लेख का अभिप्राय भारतीय जीवन-दर्शन या संस्कृति पर आक्षेप करना नहीं था वरन हिन्दी की आज की स्थिति पर व्यंग्य करना था, परन्तु कुछ लोग लेख के अभिप्राय को भारतीय जीवन दर्शन या संस्कृति पर आक्रोश करने वाला लेख समझे थे। कदापि ऐसा नहीं है। व्यंग्य लेखन कभी-कभी पाठकों को भ्रम में भी डाल देता है।

यह पत्रिका आपकी कोई भी प्रतिक्रिया का स्वागत करती है।

Scanned with CamScanner

चाय पी लो, मिठाई ले लो

योशिको ओगावा

मुझे दिल्ली आए एक साल हुआ है। यहाँ के लोगों से मेल-जोल करते हुए मुझे कई दिलचस्प बातें दिखाई दीं।

एक दिन मैं उस सहेली के घर गई जिसके पति और तीन बेटे हैं। मैं कमरे में बैठकर उसके तीन बेटों से बातें कर रही थी। मेरी सहेली ने चाय और मिठाई लाकर मेरे सामने की मेज पर रखी और उसने कहा कि चाय ले लो, मिठाई ले लो। तब मैंने शुक्रिया कहकर एक मिठाई खा ली। उसके तीन बेटों की नजरें मेरी तरफ थीं। फिर मेरी सहेली ने मिठाई की प्लेट मेरे सामने बढ़ाते हुए कहा, "एक और ले लो।" मैंने सीधे एक और मिठाई खा ली तब फिर तीनों बेटों की नजरें मेरी तरफ फिर मुड़ीं। उस समय उस घर में एक और मेहमान आया। जब मेरी सहेली ने उस मेहमान की ओर भी मिठाई की प्लेट बढ़ाते हुए कहा, "आप यह ले लीजिए।" तब उस मेहमान ने प्लेट हाथ में लेकर तीन बेटों की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ले लो।" तीनों बेटों की आँखें चमक उठीं और तीनों ने शर्माते हुए एक-एक मिठाई लेकर खा ली। उस मेहमान ने मेरी सहेली की ओर भी प्लेट बढ़ाते हुए कहा, "ले लो।" लेकिन मेरी सहेली ने "नहीं, नहीं, आप ले लीजिए" कहकर प्लेट उसकी ओर ठेल दी। तब वह मेहमान मिठाई खाने लगा।

इस सारी घटना को देखकर मुझे पता चला कि चाहे मेहमान हो, पहले मेज़बान के बच्चों को खिलाकर फिर स्वयं खाना चाहिए। यह मुझे बहुत अजीब लगा। क्योंकि जापान में कोई मेहमान चाय या मिठाई जो मेज़बान ने दी हो, उसकी प्लेट हाथ में लेकर मेज़बान के बच्चों की ओर बढ़ाते हुए 'ले लो' कभी नहीं कहते। अगर मेहमान ऐसा कहे तो मेज़बान को शायद अच्छा भी न लगे। और हो सकता है मेज़बान अपने बच्चों को वह मिठाई लेने से मना करे।

दूसरे दिन फिर जब मैं अपनी सहेली के यहाँ बैठकर बातें कर रही थी तब उसकी पड़ोसिन आई। मेरी सहेली और वह गपशप करने लगीं। काफी समय बीत गया। जब वह पड़ोसिन विदा लेने लगी तब मेरी सहेली ने कहा, "अरे, जाओगी? अभी चाय बनाती हूँ, चाय पी लो जी।" पर वह पड़ोसिन "नहीं, नहीं, मैं जा रही

Scanned with CamScanner

हूँ।" कहकर चली गई। मैं इस बात को सुनकर ऐसा समझी कि 'चाय पी लो' में चाय पिलाने का अर्थ नहीं है, बल्कि इस बात का अर्थ 'जाइए, नमस्कार' है।

जापान में कई क्षेत्रों के लोग 'जाइए, नमस्कार' की जगह 'नाश्ता कीजिए' कहते हैं। अगर कोई मेहमान इस बात को सचमुच मानकर नाश्ता करे तो लोग कहेंगे कि वह मूर्ख है। और उसको मेहमान के रूप में कभी नहीं बुलाया जाएगा।

ऊपर लिखी हुई घटनाएँ छोटी-छोटी हैं। लेकिन वे मुझे बहुत दिलचस्प लगती हैं। मुझे आशा है कि और ज्यादा ऐसी दिलचस्प बातें मिलेंगी।

□

Scanned with CamScanner

जापानी साहित्य की प्रवृत्तियाँ

शिगेओ आराकि

क्रांतिकारी साहित्य के नाम पर मजदूर साहित्य आन्दोलन शुरू हो गया था पर वह आन्दोलन सन् 1910 के कोतोकु षडयंत्र काण्ड (देखें 'ज्वालामुखी' अंक 2,पृष्ठ 21) के बाद धीमा पड़ने लगा। परन्तु पूंजीवाद और मुद्रा-स्फीति के कारण साधारण जनता के दैनिक जीवन में तंगी आने लगी और जनता के मन में असंतोष की भावना उभर कर सामने आई। कई जगहों पर कई कारखानों में हड़ताल शुरू हो गई। इस समय रूस में समाजवादी सरकार स्थापित की गई थी और जर्मनी में क्रांतिकारी आन्दोलन चरम सीमा तक पहुँच गया था। उन अन्तर-राष्ट्रीय गतिविधियों को नजर में रखते हुए जापान के बुद्धिजीवियों ने महसूस किया कि वर्ग-संघर्ष सफल बनाने के लिए तर्क-संगत अध्ययन की आवश्यकता है। रूस या जर्मनी के आन्दोलन से प्रभावित होकर जापानी मजदूर भी सोचने लगा कि जापान में भी क्रांति का जमाना आ गया है। साहित्यकार ताकेओ आरिशिमा मजदूरों के हितों के लिए लिखते थे परन्तु इस ईमानदार लेखक आरिशिमा ने अपने अन्तर्विरोध से मुक्त होने के लिए आत्महत्या कर ली। उनका अन्तर्विरोध यह था कि अमीर वर्ग के लेखक मजदूरों के प्रति सहानुभूति दिखाकर मजदूरों के हितों के लिए लिख सकते हैं पर मजदूरों के निकट तक उतरकर मजदूरों की तरह नहीं जी सकते, मजदूरों की तरह काम नहीं कर सकते। ऐसे में वे कैसे मजदूरों के सही मन को समझ सकते हैं।

सन् 1921 में प्रकाशित पत्रिका 'तानेमाकुहितो' (बीज बोने वाला) जापान की प्रथम समाजवादी साहित्यिक पत्रिका थी पर यह साहित्य से अधिक समाजवादी विचार के प्रचार-प्रसार की पत्रिका थी। यह रूस के साम्यवादी दल से संबंधित पत्रिका थी।

जब सन् 1923 में तोक्यो में भयंकर भूकंप हुआ, इससे हजारों लोग मर गए और लाखों लोग बेघर हो गए। इस घटना के दौरान असामाजिक तत्वों ने तरह-तरह की अफवाहें फैलाईं कि भूकंप का कारण समाजवादी समर्थक थे और जापान में बसे हुए कोरियाई लोगों ने भूकंप के मौके पर आग लगाई आदि-आदि। जापानी पूंजीवादी सरकार ने भी इस मौके पर साम्यवादी दल एवं समाजवादी दल को भंग करने के लिए तरह-तरह के षडयंत्र रचे। इसी कारण समाजवादी पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में भी समाज-वादी साहित्यकार एवं संस्कृतीकर्मी संघर्ष करते रहे। पत्रिका 'बीज बोने वाला' के लेखकों ने सन् 1924 में जापानी मजदूर साहित्य संघ बनाया और साहित्यिक पत्रिका 'बुनगेई सेन-सेन' (साहित्य का मोर्चा) को प्रका-

Scanned with CamScanner

शित किया। इस संघ में कई विचार के लोग शामिल थे, मार्क्सवादी, अनार्कीस्ट, Syndicatist, ईसाई समाजवादी आदि। इस संघ ने परम्परागत जापानी सामंतीवादी समाज व्यवस्था पर आपत्ति व्यक्त की परन्तु इस संघ के सदस्यों के विचारों में मतभेद के कारण संघ असफल रहा। फिर भी इस संघ के आन्दोलन को संघर्षशीलता ने जापान की जनता को काफी प्रभावित किया। सन् 1926 में 'साहित्य मोर्चा' के आलोचक सुएकिचि आओनो ने 'स्वाभाविक प्रगति और चेतना' शीर्षक निबंध लिखकर मजदूर साहित्य के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उनके विचार में मजदूर साहित्य मजदूरों की कठोर परिस्थितियों से स्वाभाविक रूप से उभरा हुआ साहित्य है इसलिए मजदूर साहित्य राजनैतिक क्रांति के लिए होना चाहिए। मजदूर साहित्य आन्दोलन सिर्फ मार्क्सवादी साहित्य आन्दोलन होना चाहिए। आओनो ने कहा कि मजदूर साहित्यकार मजदूरों की जिन्दगी को चित्रित कर संतुष्ट हो जाते हैं पर यह लेखक का व्यक्तिगत संतोष है मजदूर संतोष नहीं है। मजदूर साहित्य ऐसा होना चाहिए कि जिसमें लेखकों के मन में वर्ग व्यवस्था के प्रति विरोधी भावना व्यक्त हो और उसका साहित्य मजदूरों के हितों के लिए हो। मजदूर साहित्य मजदूर वर्ग की मुक्ति का मोर्चा है। मजदूरों की मुक्ति राजनैतिक है इसलिए मजदूरों का साहित्य राजनैतिक अवश्य है। आओनो की दृष्टि में समाज वर्ग-संघर्ष का मैदान था। आओनो का साहित्यिक सिद्धांत मार्क्सवादी था। आओनो के निबंध से प्रभावित मजदूर साहित्यकारों ने इस युग में सृजनात्मक कार्य किया।

इस युग में योशिकि हायामा का 'उमि नि इकुरु हितोबितो' ('नाविक' सन् 1924) उल्लेखनीय है। इसमें कठोर परिस्थिति के नाविक के जिन्दगी और संघर्ष का चित्रण है।

'जाड़े का दिन था बर्फ तेज पड़ने लगी। खराब मौसम के कारण जहाज की रवानगी स्थगित होनी चाहिए थी पर जहाज समुद्र की ओर रवाना हो गया। जहाज में एक नाविक बीमार पड़ गया पर जहाज के कप्तान ने उसे दवाई देने से इन्कार कर दिया। उधर समुद्र में खराब मौसम के कारण एक जहाज डूब रहा था और लालटेन से रक्षा के लिए इशारा कर रहा था नाविक ने उसे बचाना चाहा पर कप्तान ने उसे इशारे की उपेक्षा करने को कहा। इस तरह की अमानवीय विचार वाले कप्तान पर जहाज के नाविकों का क्रोध केन्द्रित हुआ। जहाज बन्दरगाह पहुँचते ही नाविकों की हड़ताल हुई। जब तक नाविकों की हड़ताल जारी रहेगी तब तक जहाज रवाना नहीं हो सकता इस विचार से कप्तान ने नाविकों की माँगों को स्वीकार कर लिया। देखने में तो नाविकों की हड़ताल सफल हो गई। नाविकों ने खुशी में भरकर जहाज रवाना कर दिया पर अगले बन्दरगाह में पुलिस उन नाविकों को गिरफ्तार करने के लिए तैयार खड़ी थी।'

इस कहानी के लेखक हायामा को स्वयं नाविक जीवन का अनुभव था, इसके अलावा हायामा ने रेल में, सीमेंट कारखाने में, किताब की दुकान में नौकरी भी की थी और नौकरी करते वक्त मजदूर आन्दोलन में भाग लेकर दो बार जेल यात्रा कर चुके थे। यह कहानी और 'इन्बाइफु' ('वेश्या' सन् 1924) नाम की कहानी उन्होंने जेल में ही लिखी। इसके बाद हायामा ने 'सेमेन्तो दारु नो नाकानो तेगामि' ('सीमेंट के डिब्बे में एक चिट्टी' सन् 1926) में लिखी। लेखक के विचारों में अराजकतावाद और समाजवाद आदि का विचित्र मिश्रण था इसलिए बाद में वे राजनीतिक विचारधारा से सम्बन्धित मजदूर साहित्य आन्दोलन से अलग हो गए।

देन्जि कुरोशिमा भी 'साहित्य का मोर्चा' के प्रमुख लेखक थे। उनका 'उजुमाकेरु कारासु नो मुरे' ('कौए की भीड़' सन् 1928) साइबेरिया में सैनिक के रूप में रहने के अनुभव के आधार पर लिखी गई युद्ध विरोधी कहानी है। बर्फ से घिरे साइबेरिया में रूस के सुखमय परिवार को देखकर जापानी सैनिक के मन में अपने देश के परिवार का स्मरण आता है। सुख क्या है? पर युद्ध में मर जाना ही उस सैनिक का भविष्य है। लेखक ने साइबेरिया के कठोर प्राकृतिक वातावरण को अच्छी तरह अभिव्यक्त किया और उस अभिव्यक्ति से युद्ध विरोधी सैनिक का मनोभाव भी पाठक के सामने उभर कर आता है। इसके बाद कुरोशिमा ने 'बुसोसेरु

Scanned with CamScanner

शिगाइ' ('शस्त्र शहर' सन् 1930) प्रकाशित की वह भी युद्ध-विरोधी कहानी थी इसलिए इसे सत्ता द्वारा जब्त कर दिया गया था।

सन् 1926 से 28 के दौरान जापानी मजदूर साहित्य आन्दोलन में विभाजन और एकता का सिलसिला चलता रहा और जापान मजदूर साहित्य आखिर मार्क्सवादी साहित्यकारों का अखिल मजदूर कला संघ और यथार्थवादी मजदूर साहित्यकारों के मजदूर किसान कलाकार संघ में विभाजित हुआ।

अखिल मजदूर कला संघ पत्रिका 'सेन्किं' ('संघर्ष का झंडा') और मजदूर किसान कलाकार संघ 'बुनगाकु नो सेन सेन' ('साहित्य का मोर्चा') प्रकाशित करते थे। अखिल मजदूर कला संघ के अधिकांश सदस्य विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाले उस जमाने के प्रगतिशील बुद्धिजीवी नवयुवक थे। उन लोगों ने जापानी साम्यवादी नीति के अनुसार समाजवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए सक्रिय कार्य किया। उन लोगों के लिए साहित्य क्रांति का एक साधन था फिर भी उन लोगों ने साहित्य को क्रांति का नारेबाजी साहित्य नहीं माना। उन लोगों ने साहित्य में कला और राजनीति के समन्वय की खोज और सृजन किया। साहित्य आन्दोलन ही उन लोगों का कार्य नहीं था, बल्कि उस जमाने के शिक्षित लोगों की करनी और कथनी के अन्तर को मिटाने के लिए समाज सेवा का कार्य भी उन लोगों ने किया।

अखिल कला मजदूर संघ के प्रमुख लेखक सुनाओ तोकुनागा, ताकिजि कोबायाशि, शिगेहारु नाकानो थे। तोकुनागा को छापेखाने की हड़ताल से संबंधित होने के कारण नौकरी से निकाल दिया गया था। उसके अनुभव पर तोकुनागा ने "ताइयो नो नाइ माचि' ('बिना सूरज का शहर' सन् 1929) लिखी। ताकिजि कोबायाशि '15 मार्च सन् 1928' लिखकर साहित्य जगत में आए। यह कहानी जापानी साम्यवाद दल पर सत्ता के दबाव को लेकर लिखी गई थी। यह कहानी अखिल कला मजदूर संघ की पत्रिका 'संघर्ष का झंडा' में छपी थी। उसे सत्ता द्वारा जब्त किया गया था पर भूमिगत रूप में उनकी कहानी को लोकप्रियता मिली। लेखक कोबायाशि ने मजदूरों की दृष्टि से और वामपंथी समाजकर्मी की दृष्टि से यथार्थपूर्ण चित्रण किया था और चित्रण के पीछे आनेवाले कल के मजदूरों के, पीड़ित लोगों की मुक्ति के लिए आशा की किरण दिखायी! कोबायाशि की प्रसिद्ध कहानी 'कानीको सेन' ('डिब्बा बंद केकड़ा कारखाना नौका' सन् 1929) में नौका में काम करनेवाले मजदूरों का संघर्ष चित्रित किया गया है। इसमें लेखक कोबायाशि ने मजदूरों का संघर्ष चित्रित करते हुए पूंजीवादी शासन, अमीर वर्ग, सेना के संबंधों की आलोचना भी की। यह कहानी भी 'संघर्ष का झंडा' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित की गई थी परन्तु उसे भी जब्त कर लिया गया था। लेखक कोबायाशि बाद में साम्यवादी दल के सदस्य बन गए और पार्टी का सांस्कृतिक कार्य करते हुए भी दूसरे नाम से कहानी या आलोचना लिखते रहे। 'तो सेइकात्सुशा' ('पार्टी कामरेड' सन् 1933) लिखने के बाद पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और पुलिस के अत्याचार के कारण लेखक कोबायाशि स्वर्गवासी हो गए।

लेखक शिगेहारु नाकानो ने सन् 1928 में साम्यवाद दबाव काण्ड को लेकर कहानी 'हारुसाकि नो काजे' ('वसंत की हवा') और किसान संस्कृतिकर्मी के संस्मरण द्वारा सामंतवादी परिस्थिति की आलोचनात्मक कहानी 'तेत्सु की कथा' (सन् 1929) लिखीं। लेखक नाकानो पत्रिका 'संघर्ष का झंडा' के प्रमुख आलोचक भी थे। उनके साहित्यिक विचार दूसरे लोगों से भिन्न थे।

साहित्य जनता को जागृत करने के साधन से पहले स्वयं उच्च स्तर का साहित्य हो। उन्होंने मार्क्सवादी विचार और जापानी परम्परागत साहित्य के मिश्रण से जापान की जमीन में एक नया साहित्य रचने का प्रयास किया। वे उस जमाने के क्रांतिकारी साहित्यकार थे। जापान में दल-बदल की परम्परा नहीं रही है। सन् 1939 लेखक नाकानो ने जेल में मार्क्सवादी विचार को छोड़कर साम्यवादी दल के बाहर रहने की घोषणा की। सन् 1933 से 34 में सत्ता के दबाव से अत्याचार से, वामपंथी दल के कई नेताओं ने मार्क्सवादी विचार

Scanned with CamScanner

को छोड़ दिया। इस घटना ने मार्क्सवादी समर्थकों, शिक्षित लोगों को चकित कर दिया, परन्तु दल-बदल के कई कारण हो सकते हैं। नाकानो ने अपने विचार के परिवर्तन को जापानी परम्परागत विचार से अभिव्यक्त कर कहानी 'मुरा नो इए' ('गाँव का घर' सन् 1935) लिखी और 'उता नो वाकारे' ('कविता से विदा' सन् 1939) और 'कूसोका तो शिनारिओ' ('कल्पनाकार और नाटक') लिखकर उस युग के अन्तर्विरोधों को चित्रित किया। नाकानो की ईमानदार अभिव्यक्ति के प्रति गैर साम्यवादी साहित्यकार और उस युग के बुद्धिजीवी भी उनका आदर करते थे।

दूसरे महायुद्ध के बाद नाकानो ने प्रगतिशील साहित्य संघ 'शिन् निहोन बुनगाकु काई' ('नया जापानी साहित्य संघ') बनाने में बड़ी भूमिका निभाई।

मजदूर साहित्य आन्दोलन में कुछ महिला साहित्यकार भी शामिल थीं। यह महिला साहित्यकार अधिकांशत: आन्दोलनकर्ताओं की पत्नी थीं। श्रीमती इनेको साता, श्रीमती साकाए त्सुबोई, श्रीमती युरिको मियामोतो, श्रीमती ताएको हिराबायाशि, और श्रीमती फुमिको हायाशि प्रमुख हैं। उन महिला साहित्यकारों ने अपने पति की मदद करने के साथ उस कठोर जीवन को महिलाओं की दृष्टि से चित्रित किया। इस मजदूर साहित्य आन्दोलन ने इस युग के बुद्धिजीवी और साहित्यकारों को काफी प्रभावित किया था परन्तु इस साहित्य आन्दोलन पर भी सत्ता ने दबाव डाला। इस दबाव एवं हस्तक्षेप के कारण सन् 1934 में मजदूर साहित्य आन्दोलन खत्म हो गया।

□□

मजदूर साहित्य आन्दोलन खत्म होने के बाद का साहित्य पराजय और निराशा का साहित्य कहा जा सकता है। प्रगतिशील साहित्यकार संघर्ष की पराजय महसूस कर रहे थे और अकेलापन भी महसूस कर रहे थे। इस पराजय और अकेलेपन में तरह-तरह के साहित्य का सृजन हुआ। पराजय को लेकर कई कहानियाँ लिखी गई और निराशा में भी कई कहानियाँ लिखी गईं। लेखक केन्साकु शिमाकि ने इस निराशा में अपना अस्तित्व खोजने का प्रयास किया। मार्क्सवादी विचार को छोड़कर दक्षिण-पंथी दल में शामिल होने वाले लेखक भी थे। फुसाओ हायाशि उनमें से प्रमुख लेखक थे। उन लोगों ने जापान रोमांसवादी साहित्य संघ बनाया। उन लोगों ने मजदूर साहित्य के पतन के बाद की गड़बड़ी में नये साहित्य की खोज की वह जापानी प्राचीन साहित्य को अपनाना था। उन लोगों ने जापानी प्राचीन साहित्य की भावना एवं जापानी राष्ट्रीयवाद पर जर्मन रोमांसवाद को जोड़ कर नये साहित्य की रचना का आह्वान किया और धीरे-धीरे यह साहित्य युद्ध के वातावरण में राष्ट्रवादी साहित्य बन गया। इस साहित्य का सौन्दर्य-बोध मृत्यु था। दूसरे महायुद्ध के दौरान जापानी सरकार ने हजारों, लाखों नवयुवकों को युद्ध के मैदान में भेज दिया। उन लोगों के लिए मृत्यु ही सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि थी। देश के लिए बलिदान हो जाना ही साहित्य का सौन्दर्य बोध था। दूसरे महायुद्ध के बाद अर्थात् युद्ध में पराजय के बाद जापान का पुनर्निर्माण प्रारम्भ हुआ। पत्रकारिता में अभूतपूर्व विकास हुआ। इसके साथ-साथ जनता की ओर से साहित्य की माँग भी हुई। परन्तु उस वक्त तक जनता की माँगों को पूरा करने के लिए साहित्य नहीं था। साहित्य शिक्षित लोगों के लिए था। इस से जनता की माँगों को पूरा करने का साहित्य उभर कर सामने आया। इस साहित्य में सनसनी, व्यंग्य हास्य शामिल थे। यह बहुत लोकप्रिय हुआ। उस वक्त तक जापान में साहित्य जीवन-दर्शन का साधन माना जाता था इसलिए साहित्य में व्यंग्य, हास्य, सनसनी की कमी थी, लेकिन जनता की माँगों ने जापानी साहित्य जगत में नया विचार जोड़ दिया। जापान में शुद्ध साहित्य और इस प्रकार के मनोरंजक साहित्य में स्पष्ट भेद होता था। शुद्ध साहित्य के लेखक कभी मनोरंजक साहित्य नहीं लिखते थे, पर मनोरंजक साहित्य की लोकप्रियता से प्रभावित होकर कई शुद्ध साहित्य के लेखकों ने शुद्ध साहित्य और मनोरंजक साहित्य का समन्वय करके कहानियाँ लिखी। यह जापानी साहित्य में मध्य साहित्य कहलाता है। (क्रमशः)

Scanned with CamScanner

परिशिष्ट

तोक्यो में एशियाई कवि सम्मेलन

गत नवम्बर तोक्यो में तीन दिवसीय एशियाई कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में एशियाई देशों के कई कवियों ने भाग लिया। भारत से डॉ० जयन्त महापात्र, डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, श्री श्यामसुन्दर जोशी, डॉ० चिदानन्द गौडा ने भाग लिया। यह सम्मेलन एक कविता प्रकाशन कम्पनी द्वारा आयोजित किया गया था। इस वजह से अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन होते हुए भी भाग लेने वाले सीमित थे। इस पत्रिका का संपादक तीसरे दिन कवि-सम्मेलन देखने गया था। उस दिन विचार-गोष्ठी होने वाली थी। शीर्षक था 'पाश्चात्य देशों और पूर्वी देशों का परस्पर सम्बन्ध—कविता, सभ्यता और आदमी' परन्तु इस गोष्ठी में हुई बातचीत विषय से दूर रही। सिर्फ साधारण विचार प्रस्तुत किये गए और अनुवाद भी ठीक से नहीं हुआ। विचारों का आदान-प्रदान कुछ भी नहीं था इसलिए गोष्ठी के अध्यक्ष को कहना ही पड़ा कि यह विचार गोष्ठी विफल रही। सिर्फ दोष अनुवादक का ही नहीं था बल्कि संयोजक, गोष्ठी के अध्यक्ष का भी था। अध्यक्षता करने वालों ने ठीक से एशियाई कवि का नाम याद नहीं किया था। इसलिए अध्यक्ष कभी डॉ० जयन्त महापात्र को भट्टटोनगर कहा और डॉ० भटनागर को महापात्र कहा करते थे और थाइलैन्ड के युवा कवि श्री पोंपाई भून को दूसरे नाम से पुकारते थे। कवि सम्मेलन में एशियाई देशों के कवियों ने कविता पाठ किया। डॉ० ओमप्रकाश भटनागर ने पहले हिन्दी में कविता सुनाई और बाद में अंग्रेजी में कविता सुनाई। श्रीमती महापात्र ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता बंगला में सुनाई। इस कवि गोष्ठी के अवसर पर थाइलैन्ड के युवा कवि पोंपाई भून ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या पर गहरा शोक प्रकट करते हुए शोक कविता सुनाई।

सम्पादक सिर्फ एक दिन के लिए इस कवि सम्मेलन देखने गया। इसलिए एक दिन को ही देखकर प्रतिक्रिया लिखना उचित नहीं होगा, फिर भी महसूस हुआ कि इस अच्छे मौके पर और कुछ किया जा सकता था और भारत में और प्रसिद्ध कवि हैं इन्हें क्यों आमंत्रित नहीं किया गया आदि आदि।

जापान के अधिकांश लोग कविता सिर्फ पढ़ते हैं, कवि कविता लिखते हैं सुनाते नहीं। अगर हम मौके पर एशियाई देशों की कविता जापान की जनता के लिए अवगत करा सकते तो कितना अच्छा था। स्पष्ट है कि यह भी एक कविता प्रकाशन कम्पनी की मेहनत से नहीं हो पाएगा।

Scanned with CamScanner

परिशिष्ट २

सद्भावना का फल

जापानी भाषा में आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की परिचयात्मक पुस्तक प्रकाशित

पाठकों को यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि इस पत्रिका का सम्पादक भारत के हिन्दी लेखकों एवं समीक्षकं के सहयोग से जापानी लोगों के लिए आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की परिचयात्मक पुस्तक प्रकाशित करने मे संलग्न था जिसका प्रकाशन गत वर्ष दिसम्बर में हुआ। पुस्तक का प्रकाशन पाठकों के सद्भावनापूर्व सहयोग से ही सम्भव हुआ। इस पुस्तक के लिए जिन लोगों ने लेख भेजे हैं उनके प्रति सम्पादक बहुत आभारी है। यहा पाठकों और लेखकों के लिए इस पुस्तक का परिचय देना उचित होगा।

पुस्तक का शीर्षक जापानी भाषा में 'गेन्दाइ हिन्दी बुन्गाकु एनो शोताइ' अर्थात 'आधुनिक हिन्दं साहित्य में आमंत्रण' यानी 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का परिचय' है।
इस पुस्तक का क्रम और लेखक इस प्रकार हैं—

1. हिन्दी साहित्य में प्रवेश	योशिआकि सुजुकि
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य एवं राष्ट्रीयता	डॉ० प्रेमशंकर
3. प्रेमचन्द और उनका युग	योशिआकि सुजुकि
4. साहित्य धारा और साहित्य आन्दोलन	
छायावाद	योशिआकि सुजुकि
प्रगतिशील साहित्य आन्दोलन	श्री शैलेन्द्र चौहान
प्रयोगवाद	योशिआकि सुजुकि
5. नयी कहानी	डॉ० शम्भुनाथ सिंह

नयापन क्या है, नयी कहानी में व्यक्ति, परंपरा एवं मूल्य, अनुभूति की प्रामाणिकता, नयी कहानी की विशेषता, आधुनिकता, नयी कहानी का परिवेश, नयी कहानी की दृष्टि

Scanned with CamScanner

6. समकालीन हिन्दी साहित्य — योशिआकि सुजुकि

राजनीति और साहित्य, साहित्य में जनता, व्यंग्य, साहित्य में धर्म एवं मृत्यु, साहित्य में भेदभाव, साहित्य में सेक्स, मनोरंजक कहानी, साहित्यक पत्रिका एवं छोटी पत्रिका हिन्दी 'हाइकु'

7. हिन्दी महिला साहित्य — श्रीमती मृणाल पाण्डे

8. दलित साहित्य और हिन्दी — डॉ आनन्द प्रकाश दीक्षित

भक्ति साहित्य एवं दलित साहित्य, दलित साहित्य की परिभाषा
दलित साहित्य का दर्शन, हिन्दी प्रदेश और दलित साहित्य

9. साहित्यकार का दायित्व (1) — डॉ० गंगाप्रसाद विमल

10. साहित्यकार का दायित्व (2) — श्री रघुवीर सहाय

11. आधुनिक हिन्दी कथाकार परिचय — योशिआकि सुजुकि

अज्ञेय, अजगर वजाहत, अमरकांत, अमृतलाल नागर, इलाचन्द्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, उषा प्रियम्वदा, काशीनाथ सिंह, गजानन माधव मुक्तिवोध, कमलेश्वर, गंगाप्रसाद विमल, ज्ञानरंजन, गिरिराज किशोर, कृष्णा सोब्ती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, शंकर जोशी, जैनेन्द्र कुमार, जयशंकर प्रसाद, श्रीकांत वर्मा, शिवानी, धर्मवीर भारती, दूधनाथ सिंह, धूमिल, नामवर सिंह, निर्मल वर्मा, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, हरिशंकर परसाई, बरसानेलाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, भीष्म साहनी, हिमांशु जोशी, फणीश्वरनाथ रेवु, प्रभाकर माचवे, प्रेमचंद, मार्कण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त, मधुकर सिंह, महावीरप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, ममता कालिया, मंजुल भगत, मन्नू भण्डारी, मिथिलेश्वर, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डे, मोहन राकेश, यशपाल, राजेन्द्र यादव, राहुल सांकृत्यायन, रामविलास शर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, रांगेय राघव, रवीन्द्रनाथ त्यागी, लक्ष्मीनारायण लाल, रघुवीर सहाय, का परिचय दिया।

निम्नलिखित ग्रंथों से भी सहायता लें

डॉ० वच्चन सिंह 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास'
डॉ० भैसरुलाल गर्ग 'स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन'
कमलेश्वर 'नयी कहानी की भूमिका'
कांति मोहन 'प्रेमचन्द और अछूत समस्या'
डॉ० नामवर सिंह 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ'
राजेन्द्र यादव 'एक दुनिया समानान्तर'
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
डॉ० रामदरश मिश्र 'हिन्दी उपन्यास'
S. Balu Rao (ed) 'Who's Who of Indian Writers : 1983'

Scanned with CamScanner

सम्पादक को इस भारत प्रवास के दौरान भी कई लेखकों से पुस्तकें मिली हैं वह इनके लिए धन्यव व्यक्त करता है।

डॉ० काशीनाथ सिंह, 'प्रतिनिधि कहानियाँ' राजकमल पेपर बैक्स
श्री मधुकरसिंह, 'भाई' चेतना प्रकाशन
मधुकर सिंह की प्रतिनिधि कहानियाँ' भारती प्रकाशन
श्री हरिहर प्रसाद, 'प्रस्ताव' अंक 6, प्रस्ताव प्रकाशन
श्री प्रियरंजन, 'पीपल का पौधा' अनामिका प्रकाशन
श्री राणाप्रताप सिंह, 'नयो संस्कृति' अक्तूबर-दिसम्बर अंक, 1984
'कथांतर' अंक 9
श्री गोपेश परीक्षित, 'अलाव' अगस्त अंक, 1984
श्री कंचन कुमार, 'आमुख' दिसम्बर अंक, 1984
श्री अभय देव,' फिलहाल'
श्री एस० बालू राव, 'इन्डियन लिटरेचर' जनवरी-फरवरी, 1985
श्री के० एस० निसार अहमद, 'चानदाना' अगस्त-अक्तूबर अंक
श्री जितेन्द्र राठौर, 'श्रमिक शतक' प्रत्यक्ष प्रकाशन
श्री राम तिवारी, 'दिशा कंठ' नया लेखक प्रकाशन
श्री हिमांशु जोशी, 'अरण्य' कल्पतरु प्रकाशन
'हिमांशु जोशी की कहानियाँ' विकास पेपर बैक्स
'अग्निसम्भव' किताब घर

इसके अलावा हमें नियमित रूप से पत्रिकाएँ मिलती हैं जैसे 'ज्ञान-विविधा', 'पहल', 'दीर्घा' एवं डॉ० विक्रम कुमार की लघु कविता। उसके लिए आभारी हैं।

Scanned with CamScanner

इस अंक के लेखक

1. **डा० तोमिओ मिज़ोकामि,** ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग
   पता : 26-6, गोतेनयामा 2-चोमे, ताकाराज़ुका-शि, ह्योगो-केन्
2. **योशिको ओगावा,** केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली कैम्पस, नई दिल्ली
   पता : बी-23, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली
3. **शिगेओ आराकि,** अध्यक्ष, एशियाई सांस्कृतिक संघ,
   पता : 249-7, मोमुरा, इनागि-शि, तोक्यो
4. **योशिआकि सुज़ुकि,** सम्पादक 'ज्वालामुखी'
   पता : 5-9, मात्सुयामा 3-चोमे, कियोसे-शि, तोक्यो

विशेष सहयोगी

1. **कैलाश चन्द्र पाण्डे,** वाई-81, हौज खास, नई दिल्ली
2. **कु० योशिको ओगावा**
3. **कु० योको फुकाज़ावा**

Scanned with CamScanner